मधुर हिंदी

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

NEP 2020
ENHANCED EDITION

7

मधुर हिंदी–7

अध्याय–1. प्रार्थना

(क) 1. नव जीवन का सवेरा 2. परोपकारी बनने की 3. श्री सुमित्रानंदन पंत **(ख)** 1. ऐसा जीवन जिसमें भय, संशय, अंधव्यक्ति न हो तथा वह परोपकारी बन सके। 2. सुख–शांति, भरा जीवन 3. पूर्णतः ज्ञानवान एवं परोपकारी। 4. उनके जीवन से भय, संशम और अंधभक्ति को दूर करके। 5. वह मानव का उपकार कर उसके जीवन को सफल बनाना चाहता है **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** 1. ईश्वर से 2. सुमित्रानंदन पंत 3. ये दोनों **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–2. जैसे को तैसा

(क) 1. लकड़ियाँ बेचने हेतु। 2. पूरे पाँच रूपये 3. क्योंकि वह उसी दाय में लकड़ी और गाड़ी, बैल ले लेना चाहता था। 4. हम उसकी ईंट से ईंट बजा देंगे। **(ख)** 1. उसने पाँच रूपये में लकड़ियों सहित गाड़ी और बैल भी ले लिये। 2. कुछ भी नहीं। 3. लकड़ियों से भरी गाड़ी देखकर उसकी बाँछें खिल गईं। सेठ ने उसके पास जाकर पूछा, ''चौधरी, गाड़ी बिकाऊ है क्या?'' 4. सेठ टके देने के लिए मुट्ठियाँ खोल ही रहा था, कि चौधरी के बेटे ने झट से उसका हाथ पकड़ लिया। फिर अपनी कमर में बँधा तेज हँसिया निकालकर बोला, ''सेठ जी, मुट्ठियाँ मत खोलो, ये तो अब मेरे साथ ही जाएँगी।'' 5. चौधरी का बेटा बोला, ''बक नहीं रहा हूँ सेठ, जो सौदा हुआ है वही बता रहा हूँ। तुम्हारे शहर में जब लकड़ियों के साथ गाड़ी व बैल बिकते हैं, तो टकों के साथ तुम्हारी मुट्ठियाँ भी जाएँगी।'' यह सुनकर सेठ के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। **(ग)** 1. लकड़ियाँ 2. गाड़ी का 3. चार 4. उसका पुत्र 5. दो मुट्ठी टके **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–3. आत्मनिर्भरता का बल

(क) 1. आत्म–संस्कार के लिए थोड़ी–बहुत मानसिक स्वतंत्रता आवश्यक है। 2. जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्मनिर्भरता आती है। 3. उसने सत्य का नहीं छोड़ा। 4. परंतु उन्होंने उन लोगों की शर्तें नहीं मानीं, जिन्होंने उन्हें अधीनतापूर्वक संधि करने की राय दी, क्योंकि वे जानते थे, कि अपनी मर्यादा की चिंता जितनी स्वयं को हो सकती है उतनी दूसरे को नहीं। 5. उन्हें मानसिक स्वतंत्रता और आत्म निर्भरता के कारण यश मिला। **(ख)** 1. नीची नज़र रखने से यद्यपि हम रास्ते पर रहेंगे, पर इस बात को नहीं देख पाएँगे, कि

रास्ता हमें कहाँ ले जाता है। 2. मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ, जो युवा पुरुष सब बातों में दूसरों का सहारा चाहते हैं, जो सदा एक-न-एक नेतृत्वकर्ता ढूँढा करते हैं और उनके अनुयायी बना करते हैं, वे आत्मा-संस्कार के कार्य में उन्नति नहीं कर सकते। 3. तुलसीदास जी को लोक में जो इतनी सर्वप्रियता और कीर्ति प्राप्त हुई, उनका लंबा जीवन जो इतना महत्वपूर्ण और शांतिमय रहा, सब उसी मानसिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता के कारण था। वहीं उनके समकालीन केशवदास को देखिए, जो जीवन भर विलासी राजाओं के हाथ की कठपुतली बने रहे, जिन्होंने आत्मा की स्वतंत्रता की ओर कम ध्यान दिया और अंत में उनकी बुरी दशा हुई। 4. जिस मुनष्य की बुद्धि और चतुराई उसके दृढ़ हृदय के आधार पर ही स्थित रहती है, वह जीवन और कार्य-क्षेत्र में श्रेष्ठ और उत्तम रहता है। 5. प्रत्येक मनुष्य का भाग्य उसके हाथ में होता है। प्रत्येक मनुष्य अपना जीवन निर्वाह श्रेष्ठ तरीके से कर सकता है। इसे चाहे स्वतंत्रता कहो, चाहे आत्मनिर्भरता, चाहे स्वावलंबन कहो या और कुछ कहो। यही भाव है, जिससे मनुष्य और दास में भेद जान पड़ता है। 6. महाराणा प्रताप जंगल-जंगल मारे-मारे फिरते रहे। अपनी स्त्री और बच्चों को भूख से पीड़ित देखते थे, परंतु उन्होंने उन लोगों की शर्तें नहीं मानीं, जिन्होंने उन्हें अधीनतापूर्वक संधि करने की राय दी, क्योंकि वे जानते थे, कि अपनी मर्यादा की चिंता जितनी स्वयं को हो सकती है उतनी दूसरे को नहीं। हकीकत राय नामक वीर बालक को देखो, जिसने जल्लाद की चमकती हुई तलवार गरदन पर देखकर भी काजी के सामने धर्म-परित्याग करना स्वीकार नहीं किया। गुरु गोविंद सिंह के दोनों पुत्र जीते-जी दीवार में चुन दिए गए, पर उन्होंने अपना धर्म नहीं छोड़ा। एक बार एक रोमन राजनीतिज्ञ दंगाइयों के हाथ में पड़ गया। दंगाइयों ने उससे व्यंग्यपूर्वक पूछा-''अब तेरा किला कहाँ है?'' उसने हृदय पर हाथ रखकर उत्तर दिया-''यहाँ''। **(ग)** 1. जिस पुरुष की नज़र सदा नीची रहती है, उसका सिर कभी ऊपर नहीं होगा। नीची नज़र रखने से यद्यपि हम रास्ते पर रहेंगे, पर इस बात को नहीं देख पाएँगे, कि रास्ता हमें कहाँ ले जाता है। 2. अपने व्यवहार में कोमल रहो और अपने उद्देश्य को उच्च रखो। इस प्रकार नम्र और उच्च विचार वाले दोनों बनो। अपने मन को कभी मरा हुआ न रखो। जो मनुष्य अपना लक्ष्य जितना ही ऊपर रखता है, उसका तीर उतना ही ऊपर जाता है। 3. यही वह चित्त-वृत्ति है, जो मनुष्य को सामान्य जनों से उच्च बनाती है, उसके जीवन को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण करती है तथा उसके अंतिम संस्कारों को ग्रहण करने योग्य बनाती है। **(घ)** 1. नम्रता 2. भाग्य 3.

अमेरिका 4. सत्य 5. हनुमान ने **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–4. सच्चा यज्ञ

(क) 1. उन दिनों एक विशेष प्रथा का प्रचलन था। मइनों के फल का क्रय-विक्रय हुआ करता था। 2. सेठानी की बात सुनकर पहले तो सेठ बहुत दु:खी हुए, पर बाद में अपनी दयनीय स्थिति को देखते हुए वे एक यज्ञ बेचने के लिए तैयार हो गए। **(ख)** 1. एक कुत्ता पड़ा छटपटा रहा है। बेचारे का पेट कमर से लगा हुआ था। सेठ को रोटी खोलते देख वह बार-बार गर्दन उठाता, पर दुर्बलता के कारण उसकी गर्दन गिर जाती थी। यह देखकर सेठ का हृदय दया से भर आया। 2. उनके मन में आया, 'मेरा काम तो पानी से भी चल सकता है। इस बेचारे मूक और लाचार जीव को एक रोटी और मिल जाए तो फिर निश्चित ही इसमें इतनी ताकत आ जाएगी, कि यह किसी बस्ती तक पहुँच सकेगा।' यही सोचकर उसने उसे आखिरी भी खिला दी। 3. नि:स्वार्थ भाव से किया गया कर्म ही सच्चा यज्ञ–महायज्ञ है। क्या आप इसे बेचने के लिए तैयार हैं? 4. उन्हें मानव के लिए उचित कर्त्तव्य का मूल्य लेना उचित न लगा। 5. उसके घर में तहखाने मिले जो हीरे-जवाहरात से भरे थे। जिससे उनकी परेशानी दूर हो गई। **(ग)** 1. सेठानी ने, सेठ से 2. सेठ ने, स्वयं से 3. धन्ना सेठ की पत्नी ने, सेठ से 4. धन्ना सेठ की पत्नी ने, सेठ से 5. सेठानी ने, सेठ से **(घ)** 1. उदार 2. ये दोनों 3. कुत्ते को 4. धर्म 5. चेतना **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–5. प्लास्टिक-प्रक्रिया व उपयोगिता

(क) 1. इससे टेरिलीन, नायलॉन, पॉलीथीन, रेयॉन, बाल्टी, मग, बेकेलाइट, पी०बी०सी०, सनमाइका, टेलीफोन आदि विविध चीज़ें बनाई जाती हैं। 2. लोहा, पीतल, ताँबे आदि धातुओं का। 3. कोयला, चूना पत्थर, नमक, पानी, गंधक तथा हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन और क्लोरीन जैसे तत्वों को मिलाकर प्लास्टिक बनाया जाता है। 4. आकार या रूप बनाना। **(ख)** 1. प्लास्टिक में अनेक गुण हैं। इस पर न तो जंग लगती है और न ही यह सड़ता है। इसे कीड़े तथा हानिकारक जीव हानि नहीं पहुँचा सकते। कि यह बहुत हल्का होता है। कुछ प्लास्टिक धातुओं से भी मजबूत होते हैं। 2. प्लास्टिक को मुख्यत: दो भागों में बाँटा जा सकता है–ताप सुनम्य और ताप दृढ़। ताप सुनम्य प्लास्टिक को यदि गर्म किया जाए, तो यह मोम की तरह नरम हो जाता है और ठंडा करने पर कठोर हो जाता है। पुन: गर्म करने पर वह पुन: नरम हो जाता है और इसे इच्छित आकार में ढाला जा सकता है। इस प्लास्टिक को गर्म करने

पर उसका भौतिक रूप बदलता है, परंतु इसके रासायनिक गुण वही रहते हैं। तापदृढ़ प्लास्टिक वह है, जिसे यदि गर्म किया जाए, तो पहले वह नरम और बाद में कठोर हो जाता है, किंतु इसके बाद उसे पुनः गर्म करने पर नरम नहीं किया जा सकता। ऐसे प्लास्टिकों को गर्म करने पर उनके रासायनिक और भौतिक दोनों रूप बदल जाते हैं। यही कारण है, कि वह पुनः गर्म करने पर पुनः नरम नहीं होता। 3. इसकी खोज सन् 1865 में अलेक्जेंडर पार्केस नामक एक अंग्रेज रसायन वैज्ञानिक ने की थी। औद्योगिक प्लास्टिक जितना उपयोगी है, उतनी ही दिलचस्प इसके विकास की कहानी है। 4. प्लास्टिक की वस्तुएँ उपयुक्त प्रकार से बने प्लास्टिक के कच्चे माल, मोल्डिग पाउडर आदि से स्वचालित मशीनों द्वारा तैयार की जाती हैं। बनने वाली वस्तुओं के अनुसार मशीनों का आकार-प्रकार होता है। मशीन में लगे हीटिंग सिलिंडर में प्लास्टिक को डालकर इसे निर्धारित ताप पर पिघलाया जाता है। तब मशीन में लगे लीवर को दबाया जाता है, इससे उसमें लगे पिस्टन का दबाव पिघले प्लास्टिक पर पड़ता है और पिघला प्लास्टिक तुरंत द्रव के रूप में नीचे लगे साँचे में चला जाता है और विभिन्न खूबसूरत साँचों में जमकर हू-बू-हू आकार ग्रहण कर लेता है और फिर इन साँचों से तैयार वस्तुएँ निकाल ली जाती हैं। **(ग)** 1. गेंद 2. कुचालक 3. दो भागों में 4. सन् 1865 में 5. अलेक्ज़ेडर पार्केस **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ (ङ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (i) 4. (v) 5. (ii) **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-6. बीज

(क) 1. एक बीज 2. डाल-पात और स्कंध मूल 3. वर के पादप का महाकार **(ख)** 1. मिट्टी के अंदर 2. अंधकारमय 3. डाल-पात, स्कंध मूल, गहरी हरीतिमा, बहु रूप-रंग-फल और फूल। 4. बीज को **(ग)** 1. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि बीज में छिपी गहरी हरियाली की सृष्टि, अनेक रूप-रंग फले और फूल छिपे होने की बात कहता है। 2. प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि संसार एक है लेकिन एक बीज सागर के समान असीमित होता है क्योंकि एक बीज से कितने पेड़-पौधे उगेंगे पता नहीं। 3. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बीज के चेतन बनने की लालसा के बारे में बताते हुए कहता है कि जड़ बीज की चाह है कि वह भी चेतन जीव बनें। (घ) 1. बीज 2. बीज 3. ये दोनों 4. बीज को 5. अंकुर **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-7. प्रकृति और मनुष्य

(क) 1. प्रकृति के साथ के लिए 2. शहरी जीवन और कृत्रिम दुनिया खड़ी करके

हम प्रकृति से बिछुड़ गए हैं। क्योंकि यहाँ प्राकृतिक वातावरण का अभाव होता है। 3. शहर में बालिश्त-भर जमीन में कृत्रिम बगीचा बनाकर, दो-चार पौधे उगाकर, हम मानते हैं कि प्रकृति के साथ हमने मेल बना लिया है। 4. ये बादल देखते-ही-देखते अपना आकार, अपना स्वरूप और अपना गठन भी बदलते रहते हैं। बादल आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, दसों दिशाओं में दौड़ते हैं, फूलते हैं और पिघल जाते हैं। वे क्षण में सफ़ेद, क्षण में श्याम और क्षण में रंगहीन हो जाते हैं। **(ख)** 1. कुछ व्यवहार कुशल लोगों ने लेखक से पूछा–''ये पेड़-पौधे, ये बादल, कुहरा तथा बर्फ़ की चोटी इनसे आपका क्या लेना-देना? उनके दर्शन के लिए आप क्यों तरसते हैं? इन पहाड़ों को देखने से आपको क्या मिलता है?'' इतना ही नहीं, उन लोगों ने लेखक की आलोचना भी की है। 2. पशु-पक्षी हमें एक क्षण के लिए दुश्मन के तौर पर देखने के बाद हमारी आँखों में आदमियत नहीं, वरन् अपनापन देखते हैं। 3.पाँच-सात हज़ार फ़ुट की ऊँचाई पर मसूरी में आने के बाद लगता है, कि यहाँ के जंगलों पर साम्राज्य का उपभोग करने वाले बादल ही मेरे समकक्षी हैं। कभी-कभी एकाध पक्षी को एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ तक की घाटी लाँघकर जाते हुए देखकर लेखक को भी अहसास हुआ है, कि पक्षी होकर नहीं, लेकिन बादल होकर इन शिखरों के बीच में बादलों में विचरण ज़रूर करे। 4. शहर में बालिश्त-भर जमीन में कृत्रिम बगीचा बनाकर, दो-चार पौधे उगाकर, लोग मानते हैं कि प्रकृति के साथ उन्होंने मेल बना लिया है। यह तो एक रूपया ब्राह्मण को देकर गोदान का समाधान मानने जैसा हुआ। **(ग)** 1. प्रस्तुत पाठ में लेखक ने शहर में रहने वाले लोग बालिरत भर जमीन में दो-चार पौधे लगाकर प्रकृति का साथ समय लेते हैं। यह तो वैसा ही है जैसे एक रुपया ब्राह्मण को देकर गोदान का हो जाना। 2. प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि कहता है कि हमारा जीवन भी बादल के समान है। कभी दुख-सुख, उतार-चढ़ाव से भरा होता है। यही हमारी जीवन साधना है। 3. प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि कहता है कि जिस प्रकार बादल जल्द ही अपना रंग, रूप, आकार, बदलकर बरसकर अपने आप को मिटा लेता है, उसी प्रकार परिवर्तन का आनंद लेना और बाद में उससे परे होना ही हमारी जीवन-साधना है। **(घ)** 1. बालक 2. पेड़-पौधों 3. काका साहेब कालेलकर 4. पशु-पक्षी 5. पाँच-सात हज़ार फुट **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-8. सच्ची तीर्थयात्रा

(क) 1. उसका आखिरी पुत्र हेमराज उसके जीवन का सहारा था। 2. लाजवंती के

यहाँ कई पुत्र पैदा हुए, मगर सबके सब बचपन में ही मर गए। इसलिए वह अपने पुत्र के प्रति चितिंत रहती थी। 3. श्री सुदर्शन **(ख)** 1. गाँव की स्त्रियाँ कहतीं, ''हमारे भी तो बच्चे हैं, तू ज़रा-ज़रा-सी बात में ऐसे पागल क्यों हो जाती है?'' 2. गाँव में दुर्गादास वैद्य अच्छे अनुभवी वैद्य थे। लोग उन्हें लुकमान समझते थे। सैकड़ों रोगी उनके हाथों से स्वस्थ होते थे। 3. उसे कुँवारी बेटी का दु:ख खा रहा था। वह रात-रातभर रोती रहती थी और सोचती थी न जाने यह नाव कैसे पार लगेगी? 4. लाजवंती तीर्थयात्रा के लिए अधीर हो रही थी। वह सोच रही थी, हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन के मंदिरों को देखकर उसका हृदय कली की तरह खिल जाएगा। मगर जो आनंद उसे इस समय प्राप्त हुआ, वह उस कल्पित आनंद की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़-चढ़कर था। 5. लाजवंती का, क्योंकि उसने तीर्थयात्रा का पुण्य लाभ छोड़कर एक गरीब माँ को उसकी बेटी की शादी में सारे रूपये दे दिए थे। **(ग)** 1. उसके अंतिम पुत्र के स्वस्थ होने पर उसका मन संतोष से भर गया। उसके डूबे हुए हृदय को सहारा मिल गया। 2. अपने सुख के लिए तो सभी मरते हैं, लेकिन परोपकार हेतु किए गए त्याग की अनुभूति अत्यंत सुखदाई होती है। **(घ)** 1. रामलाल 2. हेमराज 3. दूध दुह रही थी 4. मियादी बुखार **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-9. कृषि और सिनेमा

(क) 1. खेती से ही संपूर्ण मानव जगत का भरण-पोषण होता है। 2. यह शरीर ही मिट्टी का बना हुआ है और गोबर तो परम पवित्र वस्तु है। 3. वह इसलिए, कि सिनेमा खेती की उन्नति का एक अच्छा साधन है। सिनेमा द्वारा खेती का प्रचार होता भी है। **(ख)** 1. बड़े-बड़े हीरो फिल्मों में खेत जोतते जाते हैं और गाते जाते हैं। हीरोइन खेत पर टोकरी में रोटी लेकर आती है। हरी-भरी फ़सल में आँखमिचौनी का खेल होता है। फ़सल काटते समय हीरोइन के साथ बहुत-सी लड़कियाँ नाचती हैं और गाती भी हैं। ऐसे ही मधुर दृश्यों को देखकर पढ़े-लिखे आदमी गाँवों में आने लगते हैं और खेतों का चक्कर काटने लगते हैं। इस प्रकार सिनेमा द्वारा खेती की शिक्षा मिलती है। वास्तव में लेखक को खेती करने की सच्ची शिक्षा सिनेमा से ही मिली थी। 2. लेखक के चाचा ने लेखक को बताया था कि बाजरा खेत में खड़ा है। 3. लेखक के चाचा से 4. वह कृषि-शास्त्र की मोटी-मोटी किताबें मँगवाकर उनका अध्ययन आरंभ कर दिया। 5. प्रत्येक व्यवसाय करने हेतु उसका वास्तविक और व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए। **(ग)** 1. लेखक के चाचा ने, लेखक से 2. लेखक ने, लेखक के चाचा से 3. लेखक

के चाचा ने, लेखक से 4. लेखक के चाचा ने, लेखक से 5. रामचरन ने, अन्य किसानों से (घ) 1. बी०ए० तक 2. उत्तम 3. सिनेमा से 4. बाजरा 5. बीज गोदाम में **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–10. शनिग्रहः एक परिचय

(क) 1. बृहस्पति 2. 143 किमी० 3. शनैश्चर 4. भैंसा **(ख)** 1. चूंकि शनि ग्रह सूर्य से पृथ्वी की अपेक्षा करीब दस गुना अधिक दूर है, इसलिए बहुत कम सूर्यताप शनि ग्रह तक पहुँचता है अर्थात् पृथ्वी का मात्र सौवाँ हिस्सा। इसलिए शनि के वायुमंडल का तापमान शून्य के नीचे–150° सेंटीग्रेड के आसपास रहता है। शनि एक अत्यंत ठंडा ग्रह है। 2. ग्रहों की परिक्रमा करने वाले इन पिंडों (चंद्रों) को 'उपग्रह' कहा जाता है। पूरे सौर मंडल में अब तक करीब साठ उपग्रह खोजे गए हैं। 3. टाइटन की सबसे अद्‌भुत चीज़ है, इस पर मौजूद घना वायुमंडल। 4. शनि ग्रह की सबसे आकर्षक चीज़ है इसके चारों ओर के वलय। 5. सबसे पहले गैलीलियो ने ही इनकी खोज की। 6. कुछ साल पहले तक शनि के तीन स्पष्ट वलय पहचाने गए थे। इनके बीच में कुछ खाली जगह भी है। शनि के ये वलय इस ग्रह के विषुवतीय समतल में ही परिक्रमा करते हैं। इधर के कुछ वर्षों में पायोनियर और वायजर यानों के द्‌वारा शनि के और भी कुछ वलय खोजे गए हैं। इन वलयों की संख्या अब सात तक पहुँच गई है। **(ग)** 1. आठ 2. शनैश्चर 3. मँथने वाला 4. छठा 5. वलय **(घ)** 1. बृहस्पति 2. पृथ्वी 3. मंथिन् 4. शनि 5. सूर्य **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–11. स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगनाएँ

(क) 1. घुड़सवारी, तीर–तलवार चलाना मनु के प्रिय खेल थे। 2. मनु का विवाह झाँसी के महाराज गंगाधर राव के साथ हुआ। 3. अंग्रेज़ों ने रानी को पत्र लिखा, कि राजा के कोई पुत्र न होने के कारण झाँसी पर अब अंग्रेज़ों का अधिकार होगा। **(ख)** 1. उन्होंने घोषणा की, कि झाँसी का स्वतंत्र अस्तित्व है। स्वामिभक्त प्रजा ने भी उनके स्वर में स्वर मिलाकर कहा, हम अपनी झाँसी नहीं देंगे। 2. झलकारी बाई रानी के एक सेनानायक पूरन कोरी की पत्नी थी। 3. जब रानी को किले से सुरक्षित निकालने की योजना बनाई गई, तो झलकारी बाई ने रानी के वेश में युद्‌ध करने के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया। रंग–रूप में रानी से समानता होने के कारण अंग्रेज़ों को भ्रमित करना आसान था। वह रानी की पोशाक पहनकर युद्‌ध करती हुई बाहर आ गई। 4. क्योंकि वह देश प्रेम में अपना प्राण न्योछावर हेतु निकल पड़ी थी। 5. पेशवा बाजीराव के

बच्चों को अस्त्र-शस्त्र चलाने की शिक्षा दी जाती थी। मनु उन्हीं के साथ पढ़ती थी। उन बच्चों को देखकर मनु की भी शस्त्र-विद्या में रुचि उत्पन्न हुई। मनु ने बहुत लगन से तीर-तलवार चलाना, बंदूक चलाना और घुड़सवारी करना सीखा। झलकारी बाई रानी के एक सेनानायक पूरन कोरी की पत्नी थी। वह रानी की स्त्री सेना में सैनिक थी। वह रानी की अंतरंग सखी होने के साथ-साथ रानी की हमशक्ल भी थी। अपने प्राणों की चिंता किए बिना जिस प्रकार उसने रानी की रक्षा की, यह अपने में एक अद्भुत कहानी है। **(ग)** 1. मनु 2. छबीली 3. दामोदर राव 4. एक सैनिक 5. झलकारी बाई को **(घ)** 1. वीर 2. चंचल 3. स्वतंत्र 4. सैनिक 5. राज्य की भलाई हेतु **भाषा की बात**-स्वयं करें

अध्याय-12. मौलवी साहब की सीख

(क) 1. उनका जन्म वहीं हुआ था और वहीं की मिट्टी में खेल-कूदकर वे बड़े हुए थे। 2. उनका नाम रहमतुल्ला खाँ था, परंतु छोटे-बड़े उन्हें मौलवी साहब कहकर पुकारते थे। 3. उन्होंने एक छोटा-सा स्मारक फ़ातिमा बेगम के लिए बनवा दिया। क्योंकि वह अपनी पत्नी को बहुत चाहते थे। **(ख)** 1. उसने सुन लिया था कि गिरधारी उसने मौलवी साहब से कहा, लीला और पंचम उन्हें मार देने की योजना बना रहे हैं। 2. उसने मौलवी साहब से कहा, ''मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ, मौलवी साहब! आप आज ही चले जाइए। मैं आपसे क्या कहूँ?... आज गिरधारी, लीला और पंचम सलाह कर रहे थे कि ...'' 3. आहट होकर शांत हो गई लेकिन दो मिनट बाद ही वे क्या देखते हैं, कि धीरे-धीरे दरवाज़ा खुला और एक के बाद एक, तीन लोग घर के भीतर घुस आए। 4. वह सोच रहा था कि मौलवी साहब ने उसे मुझे बेटे के समान मानकर मुझे पढ़ाया, लिखाया था, मैं उन्हें कैसे मार देने के लिए तेयार हो गया। 5. मौलवी साहब ने अत्यंत सरल भाव से कहा, ''गिरधारी, मुझे तो वह दिन याद है जब तुम मेरी गोद में खेले थे और मैंने तुम्हें अपना करीम मानकर पढ़ाया था, लेकिन तुमसे कोई शिकायत नहीं हैं। इंसान को अपना कर्त्तव्य पूरा करना चाहिए। मैंने जो किया, वह मेरा कर्त्तव्य था। बेटे, तुम मेरे प्यारे हो और वैसा मानकर मेरे दिल से तुम्हारे लिए सदा आशीर्वाद ही निकलेगा।'' 5. दूध-सी चाँदनी में मौलवी साहब का चेहना चमक उठा, मानो कोई फ़रिश्ता बैठा हो। गिरधारी ने हाथ की चीज़ उठाकर एक ओर फेंक दी और आगे बढ़कर मौलवी साहब के पैरों के पास बैठ गया। पंचम और लीला भी चारपाई के पास आकर बैठ गए। मौलवी साहब ने उन दोनों की पीठ थपथपाई और देखा कि

चरणों के पास बैठा गिरधारी बार-बार अपनी आँखें पोंछ रहा है। **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-13. दीवानों की हस्ती

(क) 1. भगवतीचरण वर्मा 2. दीवाने मस्तमौला होते हैं। उन्हें किसी बात की चिंता नहीं रहती। 3. दीवाने **(ख)** 1. प्रस्तुत कविता में कवि ने आगे बढ़ते रहने को ही 'ज़िंदगी' का वास्तविक रूप माना है। 2. अपने को मिटाकर भी लोगों की सेवा करना। 3. उन्हें अपमान एवं सम्मान दोनों मिलते हैं। 4. दीवाने अपने ऊपर स्वयं का ही बंधन मानते हैं। 5. मान-अपमान का भाव रखने पर वह स्वच्छंद रूप से कोई कार्य नहीं कर सकते। **(ग)** 1. दीवाने मस्तमौला स्वभाव वाले होते हैं, जब जहाँ मन हुआ चल दिए। 2. जहाँ से जो मिल गया, उसे ले लिए और अपने पास जो कुछ है उसे जग को देते चले गए। 3. दिवानों में मान-अपमान का कोई भाव नहीं रहता। वे हर परिस्थिति में समान रूप से रहते हैं। आवश्यकता आने पर वे अपने हँसते हुए प्राण का न्यौछावर भी कर देते हैं। **(घ)** 1. दीवाना 2. हृदय 3. सुख-दुख के घूँट 4. हँसते-हँसते **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-14. आत्मबोध

(क) 1. चंद्रप्रकाश 2. चंद्रप्रकाश 3. आभूषण **(ख)** 1. यह मकान ठाकुर साहब के मकान से बिल्कुल मिला हुआ था। मकान पक्का, हवादार, साफ़-सुथरा था और उसमें सभी ज़रूरी सामान था। ऐसा मकान बीस रुपए से कम पर न मिलता। 2. उसे भीतर ले जाकर रमा देवी बोलीं, ''बीरू का ब्याह कर दूँ? एक बहुत अच्छे घर से संदेशा आया है।'' 3. वे समझ गए थे कि चोर चंद्रप्रकाश है लेकिन वे उसका उजागर करना नहीं चाहते थे। 4. उसे लगा कि मेरा पति पुनः सच्ची राह पर चल चुका है इसलिए वह खुशी में उससे लिपटकर रोने लगी। 5. हमें जीवन में कभी भी लालच या चोरी का भाव नहीं रखना चाहिए। **(ग)** 1. तीस रुपए 2. बीस 3. गहने का संदूक 4. पकौड़ियाँ **(घ)** 1. चंद्रप्रकाश, अपनी पत्नी चंपा से। 2. कुछ अत्यंत धनवान है दूसरा अन्य अत्यंत गरीब हैं। 3. गरीब लोग 4. आभूषण **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-15. जम्मू-यात्रा

(क) 1. प्राकृतिक सुंदरता को देखकर लोग अत्यंत खुश होते हैं तथा उन्हें अत्यंत आनंद की अनुमति होती है। 2. जम्मू पहाड़ी क्षेत्र है। यह उत्तर भारत की सीमा पर स्थित है। यहाँ हरियाली सबसे अधिक है। ऊँचे पहाड़ व मध्यम पहाड़ियाँ दिखाई दीं

तथा हरे-भरे पेड़-पौधे दिखाई दिए। 3. जम्मू के लोग जंगल से लकड़ी काटकर व उन्हें बेचकर अपना गुज़ारा करते हैं। 4. आश्चर्य होता है, कि इन पहाड़ों के मध्य भी मानव जीवन है। यहाँ के लोग छोटी कद-काठी के, परंतु ईमानदार व बहुत परिश्रमी हैं। 5. श्री नगर को धरती का स्वर्ग कहा गया है। **(ख)** 1. वे बहुत परिश्रमी हैं, दिन-रात परिश्रम करके धन कमाते हैं। 2. यहाँ की सड़के पहाड़ों को काटकर बनाई जाती हैं जो सँकटी व घुमावदार होती है थोड़ी सी असावधानी से दुर्घटना हो जाने का भय बना रहता है। 3. यहाँ वैष्णो देवी के दर्शन के पश्चात् लेखक ने शिवखोड़ी देखने का कार्यक्रम बनाया और अगले दिन सुबह होते ही वे वहाँ के लिए चल पड़े। उन्होंने यात्रा के बीच पाँच देवियाँ, बाबा जिंतो व बुआ खोड़ी के दर्शन किए। 4. इन्हीं पहाड़ों से वहाँ के जन-जीवन का गुज़ारा होता है। छोटी-बड़ी बकरियाँ पहाड़ों पर चर रही थीं। नदी के स्वच्छ जल में मछलियाँ साफ़-साफ़ दिखाई दे रही थीं। लोग मछलियों को आटे की गोलियाँ खिला रहे थे। यहाँ के लोगों का जीवन सादा व खान-पान भी सादा है। तामसी भोजन यहाँ के लोग पसंद नहीं करते। 5. अन्योन्याश्रय संबंध। **(ग)** 1. आश्चर्यचकित 2. इन दोनों के कारण 3. भयावह 4. छोटे 5. ये दोनों **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-16. वस्त्रों का इतिहास

(क) 1. पाषाण युग में जब मनुष्य वस्त्र से परिचित नहीं था, तब वह वृक्षों की छाल तथा बड़े-बड़े पत्तों से अपने शरीर को ढकता था। 2. सबसे पहले गंगा के निकटवर्ती क्षेत्रों में भारतवासियों ने कपास की खेती शुरू की। 3. वस्त्रों को केवल फैशन के अनुरूप ही नहीं, वरन मौसम को भी ध्यान में रखकर तैयार किया और पहना जाता है। 4. जम्मू व कश्मीर में अंगोरा नस्ल की बकरियाँ पाई जाती है। **(ख)** 1. जानवरों के बालों या रोएँदार रेशों से प्राप्त किए जाने वाले रेशे 'जांतवरंश' कहलाते हैं। 2. कश्मीरी बकरी 'अंगोरा' की त्वचा पर मुलायम बाल या फर होते हैं, जिनसे अच्छी शॉल बनाई जाती हैं, जो पश्मीना शॉलों के नाम से प्रसिद्ध हैं। 3. ऊन हमें भेड़, बकरी, याक आदि जंतुओं से मिलती है। 4. बालों की कटाई के बाद उन्हें अच्छी तरह से धोया जाता है, जिससे उनमें फँसी धूल, मिट्टी व चिकनाई आदि निकल जाए। यह प्रक्रिया 'अभिमार्जन' कहलाती है। पहले अभिमार्जन बड़े-बड़े टैंकों में ऊन को डालकर हाथों द्वारा किया जाता था, जिसमें काफ़ी समय व मेहनत लगती थी। परंतु आजकल अभिमार्जन बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा बड़ी सरलता से तथा कम समय में संभव हो गया

है। 5. लेदर कोट, जैकेट, दस्ताने आदि कुछ ऐसे उत्पाद हैं, जो जानवरों को मारकर उनकी खाल से बनाए जाते हैं। कुछ जानवरों की असमय मृत्यु का कारण उनसे बनने वाले उत्पाद हैं, जो धनाढ्य वर्ग द्वारा ऊँचे मूल्य पर खरीदे जाते हैं। यदि लोग ऐसे उत्पादों को खरीदना बंद कर दें, जो जानवरों की खाल से बनाए जाते हैं, तो निःसंदेह निरीह जानवरों को असमय मृत्यु का शिकार नहीं होना पड़ेगा। **(ग)** 1. ये दोनों 2. इन दोनों से 3. वस्त्रों की विविधता में क्रांति-सी आ गई। 4. बड़ी-बड़ी मशीनों के कारण 5. पशुओं की खालों से **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय–17. भारत के महान वैज्ञानिक

(क) 1. सर सी० बी० रमन 2. विज्ञान में 3. बैचलर आफ साइंस 4. डॉ० ऑफ साइंस **(ख)** 1. इस परीक्षा में कुल छह विषय होते थे, जिनमें से कोई भी तीन विषय छात्र को चुनने पड़ते थे लेकिन भाभा ने छहों विषयों में परीक्षा दी और सभी में उच्च श्रेणी के अंक प्राप्त करके अपने आत्मविश्वास और तीव्र बुद्धि का परिचय दिया। इनकी इस सफ़लता पर इन्हें कॉलेज की ओर से दो वर्ष की छात्रवृत्ति प्रदान की गई। 2. विज्ञान के क्षेत्र में इन महत्त्वपूर्ण योगदानों के लिए इन्हें सन् 1942 ई० में कैंब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा 'एडम्स' तथा 1948 में 'हॉकिंस' पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1954 ई० में डॉ० भाभा को 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया। 3. सी०वी० वेंकटरमन प्रायः समुद्र-जल के नीलेपन की कल्पना में खो जाते थे। 4. प्रो० बीरबल साहनी का जन्म 14 नवंबर, 1891 ई० को पंजाब के भेड़ा नामक कस्बे में हुआ था। 5. यह लखनऊ में है **(ग)** 1. 1909 ई० में 2. 1888 ई० में 3. 1891 ई० में 4. सात 5. 1954 ई० में **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय–18. रे मन, आज परीक्षा तेरी

(क) 1. यशोधरा अपने प्रियतम बुद्ध से पुनर्मिलन हेतु अपने मन से विनती करती है। 2. यशोधरा अपने प्रियतम बुद्ध की प्रतीक्षा कर रही है। 4. वह धन है। **(ख)** 1. बुद्ध देव चलकर आए। क्योंकि वे पत्नी को बिना बताए ही गृहत्याग कर रहे थे। 2. महात्मा बुद्ध दर्शन को पाकर लोग अपना सौभाग्य मान रहे हैं। 3. यह सेविका यशोधरा है। जो अपने पति की तपस्या में बाधक नहीं बनना चाहती थी। 4. महात्मा बुद्ध को । **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** प्रस्तुत पंक्ति में कवि महात्मा बुद्ध की पत्नी यशोधरा की पीड़ा को दर्शाते हुए कहता है कि महात्मा बुद्ध चलकर यहाँ आएँ हैं लेकिन क्या वे दो कदम बढ़ाकर अपनी पत्नी को बताकर जाते तो क्या होता क्या उनकी उनके मार्ग का बाधक

बनती? उन्होंने अपनी से पीठ क्यों फेरली। **(ङ)** 1. (iii) 2. (iv) 3. (i) 4. (v) 5. (ii) **(च)** 1. यशोधरा 2. अपने मन से 3. बुद्ध ने 4. मैथिलीशरण गुप्त **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–19. स्वदेश प्रेम

(क) 1. मालवगण का सेनापति 2. श्रीपाल 3. रात्रि में उसके पास श्रीपाल के चुपचाप आ जाने के कारण। वह चौंक पड़ी थी 4. श्रीपाल का मस्तक। **(ख)** 1. इसका कारण यह था कि रात्रि में जब विजया गा रही थी तो श्री पाल चुपके से वहाँ आ गया। 2. श्रीपाल विजया से प्रेम करता था। 3. जिस जाति ने सदा भारत के अंगरक्षक बनकर आततायियों को देश में आने से रोका है, जिसने सिकंदर महान की विश्वविजयी यूनानी सेना को हज़ारों प्राणों की बाजी लगाकर वापस लौट जाने को बाध्य किया, उसे क्यों न अपने ऊपर गर्व हो! उसे अपनी सैनिकता एवं बल–विक्रम पर अभिमान क्यों न हो? 4. जो प्रेम देश की हत्या करे, उसका गला घोंटना ही होगा! श्रीपाल मालव के मार्गों, नदी–पर्वतों से परिचित है। शक सैन्य–संख्या में हमसे अधिक हैं, उनके पास अपार अश्वारोही दल हैं, अस्त्र–शस्त्र भी अपरिमित हैं। यदि उन्हें इस देश की भूमि से परिचित व्यक्ति मिल जाए तो वह व्यक्ति हमारे लिए भयंकर है। सोचो विजया, उस समय हमारे देश का क्या होगा? 5. वह उसे छल से अपने देश के लिए अपने भाई के द्वारा उसे मरवाना चाहती थी। **(ग)** 1. प्रस्तुत पंक्ति में श्रीपाल विजया से कहता है कि मैं मानवता का तिरस्कार करने वालों, सृष्टि के चिरंतन भाव–प्रेम का अपमान करने वालों के विरुद्ध मेरा शस्त्र उठेगा। 2. प्रस्तुत पंक्ति उस समय की है जब विजया के एकांत में होने पर उसका प्रेमी श्रीपाल वहाँ आ जाता है वह लजा जाती है श्रीपाल के पूछने पर कि क्या वह डर गई तो वह कहती है कि मैं शस्त्र की धार से नहीं डरती। सिंह के तीक्षण नखों से नहीं डरती। मैं मनुष्य के शारीरिक बल से नहीं डरती। हिंसा से मैं लड़ सकती हूँ। **(घ)** 1. जयदेव 2. श्रीपाल 3. जयदेव 4. श्रीपाल **भाषा की बात**–स्वयं करें।

मधुर हिंदी

Interactive Resources

- Download the free app 'Green Book House' from google play.
- Free online support available on 'www.greenbookhouse.com'.
- Ample teacher's support available.

GREEN BOOK HOUSE
(EDUCATIONAL PUBLISHER)
F-214, Laxmi Nagar, Mangal Bazar, Delhi-110092
Phone : 9354766041, 9354445227
E-mail : greenbookhouse214@gmail.com
Website: www.greenbookhouse.com